शिक्षक-शिक्षा के ऐतिहासिक विकास

The Historical development of Teacher Education

पूर्व काल में 'प्रबोधक' अथवा कक्षानायक की परिपाटी अस्तित्व में आयी थी। प्रबोधक परिपाटी वस्तुतः छात्र को शिक्षक की स्थिति में बैठाने की थी। श्रेष्ठ छात्रों के हाथों में शिक्षण कार्य को सौंपने की परिपाटी का एक शैक्षिक महत्व था। अध्ययन के लिए छात्र का चयन स्वयं शिक्षक के ऊपर निर्भर था। इसलिए शिक्षक का ही दायित्व था कि जब तक शिष्य आश्रम में रहे, गुरु ही उसकी पूरी देख-रेख करें।

पूर्व काल में ज्ञान सम्प्रेषण मौखिक हुआ करता था। अनेक विषय यथा मानविकी, विज्ञान एवं भाषायें छात्रों को अधिकांश व्याख्या पद्धति द्वारा ज्ञान कराया जाता था। "शास्त्र' एवं उपनिषदों" की गहन दार्शनिक अवधारणाओं की व्याख्या करने के लिए शिक्षक प्रकृति का सहारा लेते थे।

शिक्षा के अन्तर्गत छात्रों

को रुचिकर एवं सार्थक अवधारणाओं को विश्लेषण करने के लिए सृजनात्मक अथवा रचनात्मक पद्धति का अनुसरण करते थे।

इस प्रकार छात्रों के मौखिक कार्यों के श्रवण, अर्थबोध परिणाम, सामान्यीकरण एवं तार्किक विवेक तथा गहन ज्ञान के व्यावहारिक उपयोग के माध्यम से शिक्षक अपने ध्येय का निर्माण करता था।

मध्यकाल में शिक्षक-शिक्षा

Teacher Education in Medieval Period

शिक्षण-व्यवसाय में संकटकालीन समय तो तब आया था जब भारतीय इतिहास में मध्यकाल का सूत्रपात हुआ था। शिक्षक को एक कठोर कर्तव्यवती माना जाता था। छात्रों से निर्धारित अनुशासन के तहत शिक्षा ग्रहण करने की अपेक्षा की जाती थी।

आरम्भिक शिक्षा - मकतबों में दी जाती थी। उच्च शिक्षा छात्रों को मदरसों में प्रदान की जाती थी। जो बड़े-बड़े नगरों में स्थापित थे। इस काल में भी विद्वानों का आदर था

इस काल में अधिकांश शिक्षक नियुक्त किये जाते थे। इन शिक्षकों को 'मौलवी' कहा जाता था। छात्रों को सुलेख एवं सरल गणित का अध्ययन कराया जाता था। शिक्षा का माध्यम उर्दू भाषा के साथ-साथ फारसी भाषा थी।

मदरसों की पाठ्यचर्या में व्याकरण अलंकारशास्त्र साहित्यशास्त्र, छन्दशास्त्र तत्व मीमांसा अथवा अध्यात्मशास्त्र साहित्य, न्यायशास्त्र तथा विज्ञान सम्मिलित थे।

छात्रों को पढ़ाने के लिए विद्वानों की सेवा ली जाती थी। शिक्षकों को सिखाने एवं प्रशिक्षण देने हेतु पुराने शिक्षकों का उपदेश सहयोग लिया जाता था।

एक बात और थी- कुशाग्र तथा वरिष्ठ छात्र भी निम्नतर कक्षाओं को पढ़ाते। उनको अनुशिक्षक का स्तर प्रदान किया गया था।

इस प्रकार, शिक्षा जगत में कक्षानायक प्रणाली भी प्रचलन थी।

इसलिए शिक्षकों में भी सामाजिक दायित्व भावना का अभाव था। उनमें परिवर्तन के प्रति कोई

उत्साह नहीं था। यदि शिक्षण में कोई प्रयोग किये जाते थे तो वह मात्र कुछ रचनात्मक शिक्षकों का अव्यवस्थित कृतित्व था। अत्यधिक बल शुद्ध हस्तलेख, स्पष्ट उच्चारण तथा धर्मग्रन्थों के सस्वर पाठ पर दिया जाता था।

शिक्षक-शिक्षा का आधुनिककाल

Modern Period of Teacher Education

मुगलों के तिरोहित हो जाने के बाद भारत में पाश्चात्य शिक्षा शास्त्रियों का उद्भव हुआ था। अंग्रेजों ने भारत के शासन को छीनकर अपने अधीन कर लिया था अंग्रेजों ने भारत में शिक्षा की नयी व्यवस्थाओं को जन्म दिया था।

इस काल में यूरोप के धर्मप्रचारक भी शिक्षक-प्रशिक्षण की नयी व्यवस्था को लेकर भारत में आये थे और उन्होंने सन् 1716 में ट्रान्केबर में अपनी संस्थायें संचालित की दक्षिण भारत में सन् 1787 में दो दातव्य विद्यालय भी खोले थे। अंग्रेज लोगों ने सन् 1793 में

बंगाल के सिरामपुर स्थान पर नार्मल स्कूल खोले थे। इसके बाद 1826 में कोलकाता, मुम्बई तथा चेन्नई में भी विद्यालय खोले गये। शीघ्र ही सन 1854 में वुड डिस्पैच में शिक्षक-प्रशिक्षण विद्यालय खोलने पर बल दिया।

सन 1859 में स्टेनले डिस्पैच द्वारा प्रशिक्षित शिक्षकों सहित विद्यालयों को वेतन अनुदान प्रदान किया गया।

सन 1882 में भारतीय शिक्षा कमीशन आयोग अस्तित्व में आया, जिसे नार्मल स्कूलों की स्थापना हेतु संस्तुति दी। इसके परिणाम-स्वरूप भारत में 106 नार्मल स्कूल स्थापित किये गये।

1892 में नार्मल स्कूल कहलाने लगे शिक्षक-प्रशिक्षण विद्यालय। महिलाओं को भी शिक्षण व्यवसाय में प्रवेश लेने को प्रोत्साहन मिला इसके बाद शैक्षिक तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए प्रेरक-प्रोत्साहन भी दिया जाने लगा।